कहानी

न्याय की कीमत

दामिनी सिंह ठाकुर

सुबह की ताज़ी हवा, मंदिर की घंटियों की मधुर ध्वनि का आनंद लेते हुए सड़कों के किनारे सैर पर निकले लोग रास्ते में खड़े फल-सब्ज़ी वालों से सब्ज़ियां खरीद रहे थे. तभी एक चमचमाती कार सोनू के ठेले के पास आकर रुकी. उसमें से एक सज्जन, जो थोड़े उखड़े हुए लग रहे थे, उतरे और बोले -

क्यों भाई, पालक क्या भाव लगाया?

सोनू ने मुस्कुराकर कहा - ले लीजिए साहब, आपको कम लगा दूंगा. सुबह शुभ बोहनी का वक्त है. क्यों? तू कोई मेरा रिश्तेदार है जो कम लगाएगा? सज्जन ने तिक्त स्वर में कहा.

सोनू विनम्रता से बोला - अरे साहब, गुस्सा क्यों कर रहे हैं? आपको जो चाहिए बोलिए न. सब ताज़ी सब्ज़ियां हैं. ये लौकी देखिए, एकदम नर्म है. नाखून लगाकर देख लीजिए.

नहीं-नहीं, बहुत महंगी हैं तुम्हारी सब्ज़ियां, कहकर वे सज्जन टालने के अंदाज़ में आगे बढ़ गए. सोनू फिर अपनी धुन में आवाज़ लगाने लगा - सब्ज़ी ले लो, ताज़ी सब्ज़ी!

इतने में वही सज्जन बदहवास होकर लौटे और इधर-उधर भागने लगे. वे अपना बटुआ ढूंढ रहे थे. बटुआ न मिलने पर वे सोनू पर ही बरस पड़े -

तुमने ही मेरा बटुआ चुराया है!

सोनू ने लाख मना किया, पर सज्जन ने पुलिस बुला ली. छानबीन से मामला साफ़ न हुआ तो सोनू को थाने ले जाया गया. सज्जन के बटुए में मात्र दो सौ रुपये थे. और संयोग से सोनू के पास भी दो सौ रुपये मिले. बस, उसी आधार पर उस पर चोरी का इल्ज़ाम लगा दिया गया.

सोनू एक साधारण, सीधा-सादा लड़का था. गांव की गरीबी और तंगहाली ने उसे शहर की ओर धकेल दिया था. सोचता था - शहर जाकर मेहनत-मज़दूरी करेगा, कुछ कमा लेगा तो बूढ़े मां-बाप का सहारा बनेगा. लेकिन उसे क्या पता था कि इस शहर में मेहनत करने वाले गरीबों के लिए जगह नहीं, बल्कि चालाकों और धूर्तों के लिए जगह बनी है.

सोनू को अदालत में ले जाया गया. वह बार-बार कहता रहा -मैंने चोरी नहीं की! पर किसी ने नहीं सुनी.

थाने में पूछताछ के दौरान पूछा गया- क्या तुमने चोरी की है? सोनू ने कांपती आवाज़ में कहा -नहीं साहब, मैंने चोरी नहीं की. मैं तो सब्ज़ी बेचने वाला गरीब आदमी हूं. मेरे पास तो रोज़ का भी ठिकाना नहीं है. चोरी क्यों करूँगा?

उसकी मासूमियत से भरी आवाज़ सुनकर किसी का भी दिल पिघल जाए, लेकिन कानून के रखवाले पत्थर बने खड़े रहे. केस सीधा कोर्ट में चला गया.

जज ने कड़ाई से पूछा - मतलब तुम इस जुर्म से इनकार करते हो? सोनू ने सिर झुका लिया. आवाज़ भर्रा गई -

हां साहब, मैंने चोरी नहीं की.

लेकिन अदालत में सच्चाई नहीं, सबूत और पैसे चलते हैं. और गरीब आदमी के पास दोनों ही नहीं होते. जज ने आदेश दिया -इसे 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेजा जाए और वकील नियुक्त करने को कहा.

सोनू को जेल भेज दिया गया. उसका छोटा सा सपना - कमाकर परिवार की मदद करना अब दम तोड़ चुका था. बाबा ने कितना मना किया था शहर आने से कि वहां की आबोहवा रास नहीं आएगी, पर भाई-बहनों की पढ़ाई, पिता जी की बीमारी और मां की रसोई सभी तो चीख-चीखकर यही कह रहे थे कि शहर जाकर चार पैसे कमाए.

उसी दौरान हवलदार रामदीन को सोनू पर दया आई. उसने बताया कि उसकी बहन मानवाधिकार आयोग में काम करती हैं. उसने सोनू को मदद का आश्वासन दिया -

सोनू, अगर उनकी मदद मिल जाए तो शायद तुम्हें न्याय मिल सके.

सोनू ने कांपते दिल से रामदीन हवलदार को धन्यवाद दिया. इंसानियत अभी जिंदा थी. हवलदार ने बहन से बात करवाई और उन्होंने तुरंत केस लेने की हामी भर दी.

वकील साहिबा कोर्ट में बोलीं - माई लॉर्ड, इस लड़के का कोई पुराना आपराधिक रिकॉर्ड नहीं है. वह पूरी तरह निर्दोष है. इसने दो सौ रुपए नहीं लिए . इसे सिर्फ इसीलिए गिरफ्तार किया गया है कि फरियादी की कार इसके ठेले के पास खड़ी थी.

जज साहब ने उसे रु.10,000 के मुचलके पर जमानत दे दी. जमानत तो मिल गई, लेकिन शर्त इतनी भारी थी कि गरीब सोनू के लिए असंभव थी.

रु. 200 की चोरी और रु.10,000 का जुर्माना! यह कैसा न्याय है? सोनू की आंखों में फिर निराशा उतर आई.

एक महीना, दो महीने धीरे-धीरे साल बीत गए. किसी केस के सिलसिले में वकील साहिबा कोर्ट आतीं और सोनू को वहां देखकर हैरान रह जातीं.

तुम्हारी जमानत तो हो चुकी थी, फिर अब तक यहां क्यों हो? फिर कुछ हुआ क्या? उन्होंने पूछा.

पास खड़े हवलदार ने बेबसी से कहा -

मैडम, यह बेचारा रु.10,000 कहां से लाएगा? इसलिए अभी तक कैद में है. सोनू की आंखें बहुत कुछ कह रही थीं. वे आंखें अब बुझ चुकी थीं. इसी दौरान गांव से खबर आई कि सोनू के बूढ़े पिता का गरीबी और लाचारी में इलाज के बिना ही निधन हो गया. बेटे की राह देखते-देखते उनकी आंखें बंद हो गईं. यह खबर सुनकर सोनू अंदर से टूट गया.

वकील साहिबा ने हार नहीं मानी. उन्होंने कोर्ट में दलील दी -पुलिस ने कोई सही जांच क्यों नहीं की? जिस व्यक्ति का बटुआ चोरी हुआ था, उसने खुद बयान दिया कि सोनू के पास जो पर्स बरामद हुआ, वह उसका नहीं है. फिर किस आधार पर इसे गिरफ्तार किया गया? लेकिन सालों से सलाखों में जकड़े सोनू का धैर्य जवाब दे चुका था. उसने टूटी आवाज़ में कहा -

साहब, हां मैंने ही चोरी की थी.

वह जानता था कि निर्दोष साबित होने की लड़ाई उससे कहीं ज्यादा लंबी और दर्दनाक थी. झूठा गुनाह मान लेना उसे आसान लगा. जज ने तीन महीने की सज़ा सुनाई. पर सोनू पहले ही सालभर जेल में रह चुका था, इसलिए उसे रिहा कर दिया गया.

सोनू जेल से बाहर तो आ गया, लेकिन उसके सपने, उसके पिता और उसकी मासूमियत सब खत्म हो चुके थे.

क्लास by बड़े भाई

भावुकता से कर्तव्य बड़ा

संदीप द्विवेदी
कवि/प्रेरक वक्ता/स्किल ट्रेनर

वाल्मीकि जी रचित प्रभु श्रीराम की कथा रामायण को उनके बाद दो महान जनों, गोस्वामी तुलसी दास जी और रामानंद सागर जी ने जिस तरह क्रमशः पन्ने और परदे पर उतारा है, अब वैसा भविष्य में बड़ा मुश्किल लगता है. जन जन में रच बस गया है.

बात आज रामानंद सागर जी द्वारा परदे पर प्रदर्शित की गयी रामायण से एक गाने के एक बोल की करूंगा. मेघनाद जब रामजी से युद्ध के लिए निकलता है,तब अपने परिवार से विदा लेते समय दृश्य के पार्श्व में एक बड़ा भावुक गीत बजता है. गीत के बोल थे

भावुकता से कर्त्तव्य बड़ा,
कर्त्तव्य निभे बलिदानों से
दीपक जलने कि रीत नही,
छोड़े डर कर तूफ़ानों से.

कितनी संदेशप्रद पंक्तियाँ. कर्त्तव्य को सबसे ऊपर रखा गया है. छोटे भाई, चाहे कभी कितनी ही मुश्किल क्यों न हो, चुनौती भरा समय क्यों न हो लेकिन हमारा अपने प्रति, अपने समाज और अपने देश के प्रति जो कर्त्तव्य है वो सदैव याद रहना चाहिए और अंतिम क्षमता तक उसका पालन करना चाहिए. पंक्तियों में इसके लिए कितना सटीक उदहारण रखा गया कि दीपक का कर्त्तव्य है जलना और वो इसका पालन तूफ़ानों के बीच में भी करने को तत्पर रहता है.

छोटे भाई, बहुत कुछ आपको करने का मन नही करेगा लेकिन अपने मन को इसके लिए तैयार करिये, अगर वह काम आपका कर्त्तव्य है. उदाहरण के लिए, आप विचार करिए कि आप किसी नौकरी में हैं तो हो सकता है नौकरी आपको पसंद न हो लेकिन यह आपका कर्त्तव्य है कि जब तक आप वहां पदस्थ हैं, हर सूरत में वह जिम्मेदारी निभाइए जिसके लिए आप रखे गये थे. यह होता है कर्त्तव्य पालन और निश्चित ही इसका परिणाम अंततः आपके लिए बेहतर होता है. यह पढने के बाद आप अपने कर्तव्यों पर विचार करिये और सहर्ष उसका पालन करने के लिए तत्पर रहिये, उससे पीछे मत हटिए लेकिन ध्यान रहे कि जिन कर्तव्यों की बात कर रहा हूँ वो विनाशकारी नही बल्कि निर्माणकारी हों. ऐसा नही कि आप किसी गलत काम में हों और आप वहां अपना हर काम कर्त्तव्य के माथे थोपकर कुछ भी करते जाएँ, जिन्होंने ऐसा किया है वो कहीं के नही रहे, मेघनाद का क्या हुआ, आप जानते हैं. बस यही कहना था, धन्यवाद

पुस्तक समीक्षा

रामायण की भूली-बिसरी पात्र शांता को गढ़ा रघुनंदिनी में

मेहा

हमारी अनमोल कृति रामचरित मानस हो या रामायण की अन्य कथाएँ, इनमें कुछ पात्र कथा प्रवाह में उपेक्षित से रह गए हैं. जैसे उर्मिला या कैकेई आदि जिन पर बाद में लेखकों ने उपलब्ध साक्ष्यों तथा अपनी अनूठी कल्पनाशीलता के साथ रचा. बल्कि जन मानस में उन पात्रों को प्रतिष्ठित किया, महत्त्वपूर्ण किया. शिवाजी सावंत, मैथिली शरण गुप्त, निराला, धर्मवीर भारती जैसे लेखकों के कईउदाहरण सामने हैं.

इसी कड़ी में युवा और समर्थ कथाकार-उपन्यासकार प्रतिमा अखिलेश ने एक नया कीर्तिमान गढ़ा है, उन्होंने श्रीराम की बहन शांता को अपनी नई कृति %रघुनंदिनी% में पुनर्प्रतिष्ठा दी है. जबकि उसकी कथा लगभग उपेक्षित, बहुत छोटी सी और महत्त्वहीन सी है. लेकिन लेखिका ने बहुत सधे हुए ढंग से इस पात्र को गढ़ा है कि शांता हमें दिखने लगती हैं.

जैसा कि हर महान कथा में होता है, एक उदात्त नायिका का वरण किया जाता है और उसको श्रेष्ठता के शिखर पर बैठाया जाता है. कथा लेखन के इस कार्य में लेखिका पूर्णतः सफल हुई हैं. नायिका शांता का चरित्र भले ही कम कहा गया,कम सुना गया और कम लिखा गया है,पर इस कथा ने नायिका का चरित्र श्रेष्ठता के उच्चतम श्रृंग पर विराजित कर दिया है. शांता अपने पिता अजपुत्र दशरथ से श्रेष्ठ है,क्योंकि साकेत आगमन पर वे अपनी पुत्री को गुरुमाता का संबोधन देते हैं. उसका चरित्र अपनी मातात्रय से श्रेष्ठ है क्योंकि माताएँ उसके त्याग को करबद्ध प्रणाम करती हैं. वह अपने पति ऋषि श्रृंग से श्रेष्ठ है क्योंकि वह उनकी प्रेम और अध्यात्म दोनों मार्गों की मार्गप्रशस्तिका है. वह अपने श्वसुर विभांडक से भी श्रेष्ठ है क्योंकि उन्ही के अनुसार शांता ने उन्हें वह सुख दिया जो उन्हें उनके वर्षों के तप से भी प्राप्त न होता,और उनके पुत्र को ईश्वर के जन्म का निमित्त बनाया! और अंत में वह सर्वश्रेष्ठ है,क्योंकि वह विष्णु के सांतवें अवतार शांताकार राम से भी श्रेष्ठ है,क्योंकि राम उनके अनुज हैं,शांता उनके अवतरण का माध्यम है, राम को उसी ने आकार दिया है.

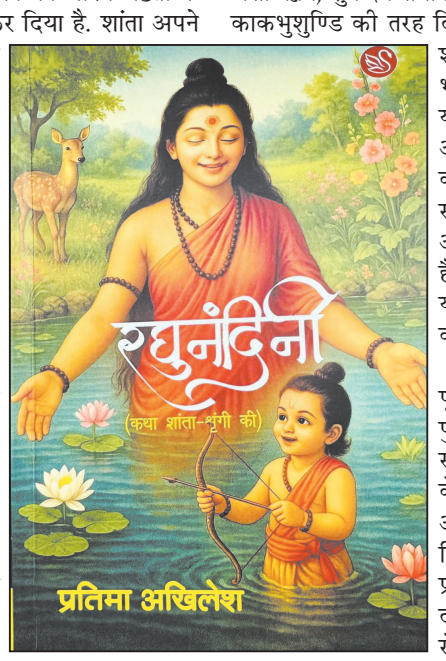

इस कथा का किस्सागो/कथावाचक कोई वाल्मीकी जैसा ऋषि, शुकदेव समान मुनि,विदुर समान नीतिज्ञ या काकभुशुण्डि की तरह दिव्यद्रष्टा नहीं, एक साधारण शीशफूल है. साधारण होते हुए भी यह असाधारण है क्योंकि यह शांता का सबसे प्रिय आभूषण है,उसके दिव्य भाल का शोभन है,शांता का प्रिय सखा है क्योंकि वह उसकी उन अंतरंग भावनाओं से परिचित है जो और कोई नहीं जानता. यही कारण है कि वह अन्य कथाकारों से श्रेष्ठ है.

ऐतिहासिक/पौराणिक पृष्ठभूमि पर लिखी गई यह पुस्तक रामकथा के चरित्रों में सबसे कम चर्चित पात्र शांता के त्यागपूर्ण जीवन पर आधारित है. साकेत के सिंहासन की अधिकारिणी प्रारब्ध के निर्णय कर अनुसार दो पिताओं (दशरथ और रोमपाद) के द्वारा प्रजाहितार्थ दो बार दान की गई. वह ईश्वर की माता हो सकती थी,पर उसने अपनी माताओं के कल्याणार्थ ईश्वर के अवतरण का माध्यम होना स्वीकारा. किसी राजा की राज्ञी हो सकती थी पर किसी तापस की पत्नी होना स्वीकारा. यह त्याग का शिखर नहीं तो और क्या है?

कथा में त्रेता युग का सुंदर वर्णन लेखिका के द्वारा किया गया है. उस युग में विज्ञान आज से भी कहीं उन्नत अगस्त्य की प्रयोगशाला के रूप में दर्शाया गया है. आर्य -अनार्यों का संघर्ष हो या साकेत का रमणीक उद्यान या फिर विभांडक का तपोवन,लेखिका के द्वारा सबका इतना सजीव चित्रण हुआ है कि पाठकों को लगेगा कि पुस्तक नहीं पढ़ रहे कोई त्रिविमीय चलचित्र देख रहे हों. लोपामुद्रा भगवती स्त्रीविमर्श के कथानक का और विस्तार करती हुई नज़र आती हैं.

बाल राम की %लघुनंदिनी% की पुकार पर जब कथा का समापन और श्रीराम युग का आरंभ होता है तो %लघु% शब्द %विराट% बन जाता है और पाठक की आँखें नम हो जाती हैं.

चाहे वह मानक हिंदी का प्रयोग हो या व्याकरण की शुद्धता, भाव प्रवणता का शिखर हो या कथानक विस्तार शिल्प के हर क्षेत्र में लेखिका ने स्वयं को एक अच्छी कथाकार सिद्ध किया है. उनसे आगे भी ऐसी अकल्पनीय सर्जनाओं की प्रतीक्षा रहेगी.

इसे श्वेतवर्णा प्रकाशन ने मनहरण मुखपृष्ठ और अच्छी गुणवत्ता से प्रकाशित किया है. अच्छी बात यह भी है कि लेखिका ने इसे अपनी बेटियों माही और नौमी को समर्पित किया है.

रघुनंदिनी (उपन्यास)
प्रतिमा अखिलेश
मूल्य-249 रुपए
श्वेतवर्णा प्रकाशन, नई दिल्ली

कविता एवं गज़ल

सुमिरन भजन , कूटस्थ कृष्ण

अजय मिश्रा

तेरी माया से ,
जगत जंजाल से ,

हम हार गये,
इस पड़ाव पर ,
समझ पाये कुछ ,
जिसको अपना मान गये ,

चेतना का ह्रास कर,
संसारी खिलोने हो गये ,
चेतना,के दिव्य चैतन्य ,
कूटस्थ कृष्ण,

पछतावे की आग ,
सुमिरन भजन बिन ,
तप्त मन ,
कूटस्थ में होम कर दूं ,

तेरे अनन्त अखण्ड,
चैतन्य में एकाकार कर दू ,

सामर्थ्य वह,
तेरी कृपा बिन ,
कौन पाये ,

सब भावना से ,
जो शरण तेरी आये

लघुकथा

फैसला

संदीप तोमर

डाइनिंग टेबल के एक ओर बेटी चुपचाप बैठी थी. उसकी प्लेट में रखी रोटी का टुकड़ा भीग रहा था — आँसुओं से या दूध से, किसी को नहीं पता.

कमरे में माँ-बाप के शब्दों की तलवारें चल रही थीं. तुम तो रोज़ ही गलत अल्फाज़ बोल बेटी को बाप के खिलाफ करने की कुत्सित नाकामयाब साज़िश करती हो. बाप ने कहा तो माँ मुस्कराई, उस मुस्कान में पीड़ा की धार थी.

देख लेना, एक दिन अपने इरादों में कामयाब होकर दिखा दूँगी. उसने बर्फ़ जैसे स्वर में कहा.

मैं तो सच के साथ हूँ, बच्चे अच्छे-बुरे को समझते हैं. बाप ने चेहरा बेटी की ओर मोड़ा. वह अब भी चुप थी. जब तक तुम्हें बर्बाद न कर दूँ, मुझे चैन न मिलेगा. माँ का यह वाक्य कमरे की हवा में काँटे की तरह तैर गया.

यही बच्चे एक दिन तय करेंगे कौन सही है, कौन ग़लत? बाप ने अंतिम हथियार फेंका.

देखा जाएगा मिस्टर... माँ ने अपना आख़िरी वार पूरा किया और चुपचाप उठकर रसोई में चली गई. बेटी अब भी चुप थी. उसने दूध का गिलास उठाया और धीरे से कहा — आप दोनों में से कौन सही है... इसकी जड में न जाकर मुझे अब बड़ों जैसा बड़ा फ़ैसला लेना होगा.

वह अपनी डायरी में एक पन्ना जोड़ रही थी — माँ-पापा, मैं घर बदल रही हूँ. शायद एक दिन आप दोनों भी बदल जाएँ.

आयोजन

आसपास को उसी बोली-बानी में कहानियों में दर्ज किया

अमर कथाकार अमरकांत के जन्म शताब्दी वर्ष में गोष्ठी

रश्मि शर्मा

अमर कथाकार अमरकांत ने अपनी कहानियों में वही लिखा, जो उन्होंने अपने आसपास आँखों देखा, कानों सुना और अनुभूत किया. बल्कि उसी बोली-बानी में. उन्होंने आज़ादी के ठीक बाद के समाज की सामाजिक और आर्थिक स्थितियों की गहरी समझ के साथ यथार्थवादी लेखन किया.

यह बात लिट्रेचर क्लब ,देवास की गोष्ठी में अमर कथाकार अमरकांत की कृतियों पर चर्चा करते हुए वक्ताओं ने कही. उनकी जन्म शताब्दी पर हुई इस गोष्ठी से पूर्व प्रतिभागियों ने बाकायदा उनकी कृतियों को पढ़ा और बातचीत की. उन्होंने कहा कि अमर कांत ने अपने लेखन में देश की अधिकांश आबादी की गरीबी और भुखमरी को मुद्दा बनाया. साहित्य सबको रोटी, कपड़ा और मकान नहीं दे सकता लेकिन उसकी उत्कट जरूरत का नैतिक बोध तो करा ही सकता है. अपनी कहानियों के माध्यम से अमरकांत ने यह बोध कराया है. अमरकांत के साहित्यिक योगदान पर बात करते हुए कथाकार श्री मनीष वैद्य ने उनके सरल सहज भाषा सौंदर्य, लेकिन गहरी आत्मीय संवेदनाओं से ओतप्रोत कहन, घटनाओं की भावपूर्ण शाब्दिक चित्रकारी पर कई बातें रेखांकित की.

मनीष शर्मा ने अमरकांत की रचनाओं को आज के समय में उतना ही प्रासंगिक बताया. बाकी साथियों ने भी अमरकांत जी पर विस्तार से अपनी बात रखी.

दूसरे सत्र में नीलम दुबे द्वारा समय व मौसम अनुसार दिए विषयों पर जितनी भी रचनाएं आई उसमें बेहतर शब्द चयन, व्यक्त भावों को गहराई और बड़ा फलक देने पर बातचीत हुई. तीसरे सत्र में ताजा रचना पाठ में बिंदु परसाई ने खूबसूरत पंच से सजी बादल सुनायी और नए एवं अनूठे बिंब से सजी दूसरों का मूल्यांकन करती नजरो पर %लाल पेन% शीर्षक से बेहतरीन रचना सुनाई. मंजू जैन ने खाली घर का सुंदर मानवीकरण कर %उम्मीद% को बनाए रखा और सराहना पाई. सुमन कुमावत ने डिजिटल दुनिया से आसान लगते %ब्रह्मांड का रहस्य% खोजा.संदीप भटनागर ने प्यारे बिंबो से सजी मनमोहक %सूरज दादा% का चित्रण बखूबी किया. कुसुम वागडे ने %हमसफर% तो सोन कुंवर राजपूत ने शिक्षक होने के संतोष और गर्व को काव्य रूप दिया. साथियों के आग्रह पर मनीष वैद्य ने प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिका हंस के ताजा सितंबर अंक में छपी एक पूरे युग को चिन्हित करती कहानी %रक्तबीज% का प्रभावी पाठ किया. यशोधरा भटनागर, शक्ति वैद्य, हिमांशु कुमावत, नीलम दुबे, शर्मिला ठाकुर तथा लाड कुंवर राजपूत की सुविचारित टिप्पणियों ने चर्चा को नए आयाम दिए.

श्रवण कानूनगो, विजय परसाई तथा नवनीत जैन भी उपस्थित थे.

दूसरा जन्म

शंकरानंद

जो गए उनकी जगह खाली है
उनके दिन आवारा
जिसको थामने वाला कोई नहीं
उनकी रात स्लेट में बदल गई है

उनके स्वप्न हाथ से छूटने के बाद
घुरकते हुए सिक्के की तरह हो गए हैं
भूसे में गुम
उसे कोई खोज नहीं पाएगा

सबके पास स्मृतियाँ हैं
यादें हैं जो धीरे धीरे
विदा होकर और धुंधली हो गई हैं
एक धब्बे में रूपांतरित

उनके सामानों को किनारे किया जाएगा
फिर धीरे धीरे उनकी जगह
कोई मेज होगी कोई कुर्सी
कोई कंटर हमें दिखाई देगा
जगहों की कमी के बीच उदासी होगी
आंखें नम
फिर जीवन की उलझन

कोई तस्वीर बिना रंग के
तारों के बिना कोई रात
बिना फूलों के वसंत
फिर ऊब और ऊब

इस तरह बदल जाएगा सब कुछ सहसा
खाली जगह एक नया मकान
अलग रंग और नक़्शे में नया पता
विदा हुए की कभी कभी याद शोक में
बस इतना ही शेष बचेगा दूसरे जन्म के लिए.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी